पंचम अध्याय

" 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की भाषा, शैली एवं उद्देश्य का अध्ययन "

पंचम अध्याय

विवेच्य उपन्यास की भाषा, शैली एवं उद्‌देश का अध्ययन

उपन्यास के तत्त्व में भाषा, शैली तथा उद्‌देश्य का विशिष्ट स्थान है। प्रत्येक उपन्यासकार अपने वर्ण्य - विषय के अनुसार विशिष्ट भाषा एवं शैली का प्रयोग करता है। प्रत्येक रचना सोद्‌देश्य होती है, वह चाहे ईश्वर निर्मित हो या मानवनिर्मित साहित्य रचना का भी एक निश्चित उद्‌देश्य है। मनुष्य ने अपने उद्‌देश्यों की परिपूर्ति के लिए जिन वस्तुओं का निर्माण किया है, उनमें साहित्य रचना सर्वोत्कृष्ठ मानी जाती है, और उपन्यास तो भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है जो भाषा शैली के आधार पर विकसित होता है।

उपन्यासकार अपने भाव एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए सरस और सरल भाषा का प्रयोग करता है। उपन्यास की भाषा में सशक्तता, गंभीरता, चित्रात्मकता एवं भावानुरूपता आदि गुणों का समावेश उपन्यास को श्रेष्ठता प्रदान करता है। डॉ. मक्खनलाल शर्मा भाषा के संदर्भ में लिखते हैं, " उपन्यास की भाषा में न कहानी की सी क्षिप्रता और त्वरित गती होती है और न निबन्ध की सी शिथिलता, न कविता की सी भंगिमा और रसमग्रता होती है, और न नाटक की सी वार्तालाप शैली, उपन्यास में ये सभी गुण समन्वित होकर रहते है।" [1]

भावों और विचारों के संप्रेषण का माध्यम शैली है। जिस प्रकार शरीर के बिना आत्मा का कोई महत्त्व नहीं, उसी प्रकार शैली के बिना अनुभूति का प्रकटीकरण संभव नहीं। श्यामसुन्दर दास शैली के विषय में लिखते है - " अतएव यह स्पष्ट हुआ कि भाव, विचार और कल्पना तो हम में नैसर्गिक अवस्था में वर्तमान रहती है, और साथ ही उन्हें व्यक्त करने की स्वाभाविक स्थिति भी हममें है। अब यदि उस शक्ति को बढाकर, संस्कृत और उन्नत करके हम उसका उपयोग कर सकें तो उन भावों विचारों और कल्पनाओं के द्‌वारा हम संसार के ज्ञानभंडार की वृध्दि करके उसका बहुत कुछ उपकार कर सकते हैं। इसी शक्ति को साहित्य में शैली कहते है।" [2] प्रत्येक उपन्यासकार की अपनी विशिष्ट शैली होती है। अच्छी शैली वही होती है, जो लोक - प्रयोग मे समन्वित होती है।

उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन नहीं है। उसके मूल में जीवन की एक निश्चित विचारधारा निहित होती है। उपन्यास का उद्‌देश्य जीवन की व्याख्या या जीवन की आलोचना है इस संदर्भ में डॉ. रामप्रकाश कहते है- " निरूद्‌देश्य तो कोई रचना हो ही नहीं सकती। यदि कोई लेखक केवल पाठकों को विनोद सामग्री या काल यापन का एक साधन प्रदान करने के लिए उपन्यास रचना करता है, तो हम इसे भी उसका एक उद्‌देश्य मान लेंगे तब हम कह सकते है कि उपन्यासों का लक्ष्य पाठकों का मनोरंजन मात्र करना है, कुछ भी हो उपन्यास में व्यंजित लेखक का वैचारिक दृष्टिकोन ही उसका उद्‌देश्य समझना चाहिए।" [3] उपन्यासकार लोकहित की भावना से उपन्यास लिखता है और जीवन की विशिष्ट व्याख्या करता है।

अतः उपन्यास में भाषा, शैली, उद्‌देश्य अपना - अपना अलग अस्तित्व एवं महत्त्व लेकर स्थापित हो चुके हैं, जिसके संबंध से ही उपन्यास का अपना अलग विश्व निर्माण हुआ है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में भाषा, शैली और उद्‌देश्य का प्रस्तुतीकरण लेखक ने कैसे किया है उसे यहाँ देखेंगे -

भाषा

5.1 ग्रामीण बोलचाल की भाषा :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी का 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास ग्रामीण वातावरण से अधिक संबंध रखता है। उपन्यास के पात्र ग्रामीण परिवेश के होने के कारण उनकी भाषा में ग्रामीण बोलचाल की भाषा के शब्दों की तथा वाक्यों की बहुलता अधिक हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में लौंडो - लपाडों, जुगादडी, पदकडी, बची - खुची, तनी, परजा, छोटकवा, कथरी का होना, मडहा, कमरू - कमच्छा, चीलर, लोटा - डोर, रोटी - तरकारी, तितर - बितर, इक्की - दुक्की, हय - हय, खट - खट, कुसाइत, तोला, माशा, रत्ती, छाटाँक, पवन्ना, ढउूँचा - पहूँचा, खाना - वाना, काम - वाम, बन - ठन, घर - गिरस्ती, चौमासा, हँसी - ठिठोली, सोनवा, रूपवा, तंबवा, लोहवा, झुम्मार, ऐरू - गैरू, उठल्लू का चुल्हा, मार - काट, मरियल, आटा - नून, झींगुर, सील - बट्टा, गेहूँ - वेहूँ, नेग, बूँदाबाँदी, दोंगरा, बिता - भर इस्टाट, चमडा - वमडा, झोंटा - झोंटव्वल, रँडहो - पोतहो, खेती - वारी, मुसल्ले, कटुवा, लौकी - कुम्हडा, मगन - मन, मुडा - तुडा, झुंड, खोंसना, घूँसे - मुक्के, लोटे का पेंदा, कुल्ला - वुल्ला, बहरे - तवील, पसाडा, खपडे, आत्ता - पत्ता, चुल्हा - बासन, चँदुले संझा - सबेरा, पोतनी, मिट्ठी, लऊँडा, गाँव - जवार, नौटंकी - सौंटकी, इहाँसे, अउर, पालागी, खाद - वाद, चमार - सियार, सहर, कउनो, छूत - छात आदि शब्द ग्रामीण बोलचाल की भाषा के शब्दों के प्रयोग अधिक मात्रा में किये गये हैं।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में " अरे छोटकवा की अम्माँ, ऐसे वक्त पर तो चिरई - चुनगुन कुतिया - बिलाई भी दुश्मनी भुला देते। " [4] अबहिन त ऊ दिन हमारी नतिनिया के चूरी पहनावे आयी रहिन 'बताइन नाँही कछु", "मुड़िया काटिके उहै पलरा में दबइ देब", दाई - दाई, ऊ दहिजरा हमरे उप्पर गिरि के हमका दबाए देत रहा।", "तैं कउन होती है रे हमारी गँवई में पाँव धरनेवाली। चल हट्ट। " [5] ई तो बहु हम्मैं भी लगा", "कोउ नृप होय हमें का हानी, चेरी छाँड न होउ बै रानी", राँड - साँड सीढी संन्यासी, इनसे बचै त सेवै कासी", "निकर सारे चुड़िहार की औलाद", "एक्कोठै चिट्ठयो त नहीं लिखेन", "तो का तूँ समझत हो कि हम तोहार गोड चाटेंगे।" [6] "लाओ इ ससुर के नाती अइसे न खुलिहैं", "अरे बेटखई, तैं राँड होइ जी।" तोहरे आदमी क लहास निकरे। चोप्प भतारकाटी, कुलच्छिन।" परसाल के आपन बिटिया क पेट गिरवाय रहा ? " [7] नहीं भूरी की माई लोहार भूरी का एतना दुबराय गई बा।" " तुम्हार सुथन्ना उतार के काटी लेबूँ हाँ", " ई धरती में हमारी नार गडी है", " अरे, ई काहे नाहीं सोचतिउ कि मरद बरोबर त तुम्हार बेटवा अहै।" " ऊ सखा सिकाइत करी हमार।" इसके साथ आला - बाला बोलना आदि वाक्यांश ग्रामीण बोलचाल की भाषा के है।

निष्कर्ष :-

उपन्यास के अधिकांश पात्र ग्रामीण इलाके से संबंधित होने के कारण बोलचाल की भाषा का अधिक प्रयोग प्रस्तुत करते है। जिससे उपन्यास की भाषा पात्रानुकूल बन पडी है।

5.2 परिनिष्ठित भाषा :-

प्रस्तुत उपन्यास के कुछ पात्र पढ़े - लिखे तथा शहरी वातावरण से संबंधीत होने के कारण उपन्यास में शुध्द - साहित्यिक परिनिष्ठित भाषा के प्रयोग मिलते हैं।

उपन्यास में इंडियन फादर अशोक फ्रांसिस की भाषा शुध्द है, जैसे - "अरे अली अहमद, तुम ईसाई क्यों नहीं हो जाते ? आखिर प्रभु यीशु ख्रीस्त को तो तुम लोग भी मानते हो।" पं. दयाशंकर पाण्डे भी शुध्द भाषा का प्रयोग करते है जैसे - "देखिए सत्तार बाबू, आप अपराधी हैं या नहीं, इसका फैसला तो कानून करेगा, मगर गाँववालों के रूपये न मिले तो वे लोग क्या समझेंगे ? इसलिए अच्छा तो यही होगा कि आप खातेदारों का पैसा अदा कर दें।" [8] बवाली की भाषा भी परिनिष्ठित भाषा है - "मुझे तो लगता है लताजी, आप भी हम लोगों की तरह क्रांतिकारी है।"

इसके अतिरिक्त लता, अजय, अशोककुमार पाण्डे शिक्षित होने के कारण इनकी भाषा परिनिष्ठित भाषा है, जैसे - " जी नहीं, आपकी यह बात पूरी तरह सच नहीं है। हमारे - आपके बदल जाने से कुछ नहीं होने का। आवश्यक यह है कि पूरे देश की मानसिकता बदले। और यह इतना सरल नहीं है।" "बस ..... बस ..... समझ गया। 'आपकी नीति भला काँग्रेस की नीतिसे भिन्न कैसे हो सकती है ? हरिजन और मुसलमान तो उसके अन्नदाता हैं न।" "आजकल के लडके तो वही पढ़ते हैं, जिससे उन्हें नौकरी मिलने में सहाय्यता मिलती हैं।" [9] उनके माता - पिता भी उन्हें यही शिक्षा देते है।" "जो कुछ देश में हो रहा है।" [10] आदि वाक्यों में परिनिष्ठित भाषा का परिचय प्राप्त होता है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है शहरी वातावरण से संबंधित पात्र तथा शिक्षित पात्र परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग करते हैं।

5.3 चित्रात्मक भाषा :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। भाषा को पढ़ते समय एकाध प्रसंग एवं घटना का तात्काल चित्र आँखों के सामने खडा रहता है उसे चित्रात्मक भाषा कहा जाता है।

"हिंदुस्तान में स्वाधीनता आंदोलन के समय बलापूर में गांधीजी आए थे, और उनका व्याख्यान तालाब के पारवाली बगिया में हुआ था, तब गाँव के नौजवानों ने तकली पर सूत कातने का और खद्दर पहनने का व्रत लिया था।" इस प्रसंग से आजादी के आंदोलन का चित्र स्पष्ट रूप से सामने उभरता है।

लेखक ने अली अहमद के परिवार का उपन्यास में चित्रण किया है अली के बचपन के दिनों का भी उल्लेख इस प्रसंग में आया है। अली का स्कूल जाना, बडे भाई समी की छत्रछाया में पलना आदि प्रसंगों का विवरण एक चित्र खींचने का काम करता है।

रनिया के पेट में दर्द होना, रनिया की कराहने की आवाज बढ़ना, रनिया का तडपना, भोकार फोडकर रोना, रनिया की चीख़, फुल्ली दाई के जोशीले शब्द ..... क्हाँ - क्हाँ - क्हाँ- क्हाँ का आवाज इस प्रसव पीड़ा का चित्रण चित्रात्मक भाषा की गवाही देता है।

फुल्ली दाई की नातिन रामकली की इज्जत लूटने के प्रसंग का वर्णन, उस समय का भयानक शोर, लोगों का दौडना, रामकली की चीख, आदमी का धोती पकडे भागने का चित्रण इसमें लेखक ने चित्रात्मक भाषा का अच्छा नमूना पेश किया है।

दुल्लोपुर में निर्माण हुई अकालग्रस्त स्थिति का वर्णन, नाले का पानी सूख जाना, जंगल की हरियाली गायब होना, ढोर - डाँगर का पटापट मरना आदि प्रसंग यहाँ साक्षात अकाल का चित्र सामने खडा कर देते है।

जबंलपुर में हुए •हदू - मुस्लिम दंगे का प्रसंग आजादी के दिनों की हलचलों का चित्र उभारता है।

बलापुर के चुनाव की गहमागहमी का वातावरण चित्रात्मक भाषा के माध्यम से हूबहू खडा किया है। जैसे - सभी पाम्टयों की गाड़ियों का गाँव में आना, Ý‍ंडे, पोस्टर, बच बाँटना "' Or की दीवारें पोस्टरों से और खपरैलें Ý‍ंडों से भर गई थी। [11]

उपन्यास में हेरटुम साहब का गुनगान - दशहरा - दीवाली में लगनेवाले मेलों का चित्रण, चुनिया की शादी का वर्णन, नैनी - बलापुर के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण, लालबहादुर शास्त्रीजी के बचपन के प्रसंग, बुध्दू - भूरी अनैतिक संबंध का वर्णन, बांग्लादेश की निम्मती के समय हिंदुस्तान में लगे शरणार्थी कैंपों का वर्णन, लल्लू की हत्या पर सत्तार की अम्माँ का दुःख एवं आक्रोश का वर्णन लेखक ने चित्रात्मक भाषा में उभारा है, जो पढ़कर तात्काल आँखों के सामने वह प्रसंग हूबहू खडा रहता है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि उपन्यासकार ने बेजोड भाषा का प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोग करके प्रत्येक प्रसंग एवं Oटना से पाठकों के सामने एक चित्र बनाकर खडा कर दिया हैं। जिससे चित्रात्मक भाषा की यथार्थता का परिचय प्राप्त होता है।

5.4 लोकगीतात्मक भाषा :-

हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में खास तौर पर लोकगीतात्मक भाषा का प्रयोग अधिक किया जाता है। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में भी लेखक ने लोकगीतात्मक भाषा का प्रयोग किया है। ये लोकगीत उपन्यास के, परिवेश को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते है।

प्रस्तुत उपन्यास में लोगों के मन से आजादी का खुमार अभी उतरा नहीं है इसी दौरान हमारे राष्ट्रपुरषों का गुणगान स्त्रियाँ गँवई गीतों में व्यक्त करती हुई कहती है-

" एक दिन सखियन संग सैंया,
चली गई गुलजार में,
नेहरुजी को गुलाब में देखा
गाँधी जी को अनार में। " [12]

इस लोकगीत में राजनीति का मिश्रण एक नया प्रयोग लगता है।

बलापुर गाँव का पागल युवक लल्लु अँग्रेजी मिश्रित हिंदी का लोकगीत गाते हुए कहता है -

" डोंट टच माई बाडी मोहन रसिया,
हाँ मोहन रसिया
यू आर ए सन ऑफ श्री बिंदरावन
एण्ड आई एम ए डॉटर ऑफ
गोकुल रसिया। " [13]

लोकगीतों के रूप में यह रिमिक्स का एक नया प्रयोग लगता है। पंडित रामवृक्ष पाण्डे की कन्या लता पहले से ही शिक्षा प्राप्त कर रही थी। अब गाँव की अन्य लडकियाँ भी पढेंगी गाँव का ज्ञान और तेज बढ़ेगा। आँगन में गानेवाली औरतों के गीत का बोल बदल गया था जैसे -

" मोरी धानी चुनरिया इतर गमके
मोर बारी उमरिया नइहर तरसे
सोने के थारी में जेवना परोसेवँ.....। " [14]

लता के विवाह में नौटंकी लाई गयी थी, जिसमें से एक लडका अपनी कमर पर हाथ रखकर गाता है-

" राजमहल में मोरवा नाचें
मोरवा नाचे चकोरवा नाचें
राजमहल में .....। " [15]

यहाँ विवाह में मनोरंजन के लिए गाये जानेवाले लोकगीत को प्रस्तुत किया गया है।

अकाल के कारण इलाके की जनता त्रस्त हो गई हैं। कई दिनों के इंतजार के बाद बरसात का पानी बरसने पर उल्हासित होकर किसान गाते हुए कहते हैं -

" गरजय बादर, खाथय पछाड
धर संगी नागर, आ गय आषाढ " [16]

बलापुर में चुनाव की गहमागहमी शुरू हो गई थी, लोग अपनी - अपनी पार्टियों के प्रशंसा के गीत गा रहे थे -

" बरगद होइ गै सरगद हो
बरधा नरियार
जीतै दीपक वाला । "

" सैकिल होइ गै पंचर हो
दियना गइ बुझाइ
जीते बैल की जोडी । " [17]

अशोककुमार पाण्डे के विवाह की तैयारियाँ जोरों पर थी। स्त्रियों ने हप्ता - भर पहले से ही गाना - बजाना आरंभ कर दिया था। पेट्रोमैक्स की रोशनी में स्त्रियाँ गा रही थी -

" आजु सोहाग के राती, चंदा तुम उगिहो
मउरो पे ठगिहो, मउरियो पे उगिहो
उगि रहियो सारी राती, चंदा तुम उगिहो
आजु सोहागे के राती .....। " [18]

आदि लोकगीतों के माध्यम से लेखक ने विवेच्य उपन्यास में लोकगीतात्मक भाषा का अच्छा प्रयोग किया है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि विवेच्य उपन्यास में प्रयुक्त हुए लोकगीत हिंदी अँग्रेजी मिश्रित रिमिक्स का, संबंधित भूभाग की विशेषताओं का तथा वहाँ के लोगों की मानसिकता का अच्छा दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं।

5.5 बुंदेलखंडी भाषा :-

'मुखड़ा क्या देखे' उपनयास में अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने पहाड़ी क्षेत्र की बुंदेलखंडी जनभाषा तथा बोली का प्रयोग बडी मात्रा में किया है। उपन्यास में पहाड़ी इलाके में रहनेवाले ग्रामीण पात्रों की संख्या अधिक होने से ये उपन्यास बुंदेलखंड और पहाड़ी क्षेत्रों की बोलियों पर आधारित है -

प्रस्तुत उपन्यास के पात्र - अली, सत्तार की अम्माँ, रनिया, भूरी, रामवृक्ष पाण्डे, फुल्ली दाई, बिशुन भाट, रामदेव चमार, तोते पासी, आदि कई पात्र बुंदेलखंडी भाषा में अपने संवाद प्रस्थापित करते हैं। अली अहमद कहता है - " भाभी तनी रनिया को चलकर देखिए तो, कब्बे से मार चीखे जा रही है। ", " घर में कुछ होएवाला हँ दाई। तनी चली चलतू। " फुल्ली दाई कहती है - " अबहिन त ऊ दिन हमारी नतिनिया के चूरी पहनावे आयी रहिन, बताइन नाँही कछु। " सोमारू कहता है - " जाए दे रे, गाँव के मनई के काहे परेसान करेथे। चिन्हते नाँही का ? चल ईंहाँ आव। " रामवृक्ष पाण्डे फुल्ली दाई को कहते है - " ए फुल्ली। आपन भतार क बगिया समझ लिहे हैं का रे, भाग जा ससुई नाँही त बतावत हुई अब हीं हम। मुड़िया काटिके उहै पलरा में दबाइ देब .....।" [19] एक

औरत कहती है - " अरे बाबा, का तूँ तन्नी बुड़ा बात बरे मोली साब के परासान करत अहै। पाँडे बबा त बाम्हन देउता अहैं, मारि दीन्ह त समुझि ल्यो पाप कटि गवा। " अली दुकानदारिन से कहता है - " अरे काहे अइसन अत्त किहे हऊ। इकन्नी के बारा तो हमरे गाँव मा अहै। दुइ पइसा के छै ठै देबू। " लोगों की चर्चा में भी इस भाषा का प्रयोग मिलता है, जैसे - " अउर भई ई परचार तो हद ही है", " राम का नाम लो, अब बहुत हुइ गवा। " मुन्ना पंडितजी से कहता है - " हम का बतावै महराज, हममें दोख का है ? हम त आपन बाप - मतारी, आपन पेट, आपन इज्जत सब कुछ आपके चरनो में अरपित कर दिए है। " दो स्त्रियों के बीच झगडे में इस भाषा का संवाद दिखाई देता है, जैसे - " चोप्प । निरबंसिन, मोंही कहे ते कहे, मोर बिटिया के कहबी त टांग चीर के लुआरी घुसेर देबू। " बवाली रनिया से कहता है - " अरे बहु के तो न पूछिए, पोती के बरे बड़ी छोहान हऊ। " [20] एक स्त्री दूसरी स्त्री को अकाल की स्थिति बताते हुए कहती है- " अरे बहिन, जब हमारा लडका बेटउना दुइ बरस के रहा, त एक दाईं बढनी देखाई पडीं। कुआँ - पोखरा सूख गयेन, गाय - गोरू मरि गयेन, गाँव के मनई तो भागि - भागि के कजनी कहाँ चले गयेन।"

निष्कर्ष :-

संक्षेप में उपन्यास की कथावस्तु में संबंधित प्रदेश की लोकबोली के रूप में बुंदेलखंडी भाषा कार्य करती है।

5.6 उर्दू - अरबी - फारसी शब्दों का प्रयोग :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के अधिकांश पात्र मुस्लिम परिवार के होने के कारण उनके व्यवहार में आनेवाले अनेक उर्दू - अरबी - फारसी शब्दों का प्रयोग उपन्यास की भाषा में तथा संवादों में विविधता स्पष्ट करते है, उपन्यास में वर्णित उर्दू - अरबी - फारसी शब्द जैसे - मदरसा, मौलवी, रहमदिली, शराफत, आपा, मरीज, काफ़िला, कब्रिस्तान, शीशी, दफन, नेकदिली, माचिस, हुकूमत, इंसाफ, मीलाद, जुम्मा, नेक, मासुमियत, मातम, खाला, माशा - अल्लाह, चावल, डाकखाना, खटिया, महजिद, अजान, शुक्रिया, बावर्चीखाना, आदाबर्ज, बरात, इंतजाम, इज्जत घूँघट, रूमाल, बाराती, कुरान, सेहरा, जुर्म, फरमाइश, देग - बर्तन, नमाज, गुनाह, सालन, कारज, गोश्त, निकाह, पनाह, प्याज, कलमा, अखबार, नकाब, बरमदा, रफ्तार, रपट, चारपाई, मुहब्बत, लफ्ज़, जजमानी, रहेन, ताबीज, औलाद, इत्तेफाक, जिन्दगी, शिकायत आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास में उर्दू - अरबी - फारसी शब्दों ने मुस्लिम परिवार के रहन - सहन को स्वाभाविक ढंग से व्यक्त किया है।

5.7 अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग :-

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के पढ़े - लिखे शिक्षित पात्र अपनी भाषा में अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं, तथा शहर से संबंधित ग्रामीण पात्र भी अपनी भाषा में कई - कई अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। उपन्यास में आए अँग्रेजी शब्द जैसे - रिवर, स्ट्रीम, सेकंड, वाइफ, डोंट टच माइ, यु आर ए सन आफ, एंड आइ एम ए, डाटर ऑफ, क्वीन विक्टोरिया, यू डैम फूल, माई फादर, माई गाड, स्कूल, रेल्वे क्रासिंग, ट्रक, सिगरेट, लाइसेंस, लाइन, डाक्टर, बस, गुड, नून, मिस्टर व्हाई, व्हेयर इज दैट फेलो, हू, थैंक यू, फीस डे, रजिस्टर, पीरियड, ट्रांसलेशन, सैंटस, लव लेटर, स्टेज, एक्टर, टार्च, एम्प्रेस, गुड ग्रेसस, स्ट्रांग, प्रेयर, दिस अवर्स, इज मैजेस्टी, नेचर, काइंड, ग्रेसस, डाइनेस्टी, सिंसीअरली, वे प्रे कंबाइंड, रेडिओ, माइक फ्री, टानिक, बिजी, नालेज, टाकिंग, फर्स्ट, कोर्ट, इंग्लिश, इलेक्सन, फेवर, फ्राडयुनिवर्सिटी, स्टार्ट, किक, रिजर्व, स्पीच, डार्लिंग, स्टोरी, आइसक्रीम, रूम - हिटर, मोटरकार, सर्किट हाउस, मील प्लेट, गॉड, डैमफूल आदि अँग्रेजी शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में उपन्यास के अँग्रेजी शब्दों ने शिक्षित समाज तथा आधुनिक बोध का दर्शन स्पष्ट किया हैं।

5.8 मुँहावरे, कहावतें एवं सुक्तियों का प्रयोग :-

मुहावरें तथा कहावतें और सूक्तियँ उपन्यास की भाषा को सौंदर्य का चोला पहनाती है। अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में अनेक प्रकार के मुहावरें, कहावतें तथा सुक्तियों का प्रयोग करते हुए भाषा सौंदर्य को बढ़ाया है।

मुहावरें:-

दिन - दूनी रात चौगुणी होना, हृदय फुला न समाना, पापड बेलना, साँप सूँघना, हमल न होना, नकबाँसा टेढ़ा होना, टस से मस न होना, पुलकित होना, खाट खडी करवाना, तिलमिला उठना, सीना चौड़ा होना, उत्साह दोगुना होना, दाल में कुछ काला होना, चौंक उठना ब्रहातेज बलबलाना, बिच्छी काटना, तहलका मचना, कान काट लेना, चहल - पहल मचना आदि मुहावरें प्रयुक्त हुए है।

कहावतें :-

माई होत त मौसी के काहे गोहराइत, धूप से बाल सफेद, पूरा खीरा मीठा और आखिर में जाकर कडुवा, रहें भुईं चाटें बादर, जहाँ पेड न रूख,

वहाँ रेंडै महापुरूख, दुधारू गाय की दो लात भी सहनी पडती हैं, करिया अच्छर भँइस बराबर, एक हाथ ककरी नौ हाथ बीजा, मगर से बैर करके पानी में रहा नहीं जा सकता, मूल से सूद जादा प्यारा होता है। आदि कहावतें दिखाई देती हैं।

सुक्तियाँ :-

जाके आँगना बहे नदी, सो क्यों मरे पियास, दिनभर बद्दर रात निबद्दर, बहे पूरवाई झब्बर - झब्बर, जब राजा नल पर बिपत परी तब भूँजी मछरी जल में गिरी, कोउ नृप होय हमें का हानि, चेरी छाँड न होउ बै रानी, जैठ जरै, माय ठरै, तब मुँह में रोग धरे, अकास में बढनी निकरै तै समझो राजा पर बिपत पडैवाली है ? ''

निष्कर्ष :-

संक्षेप में मुहावरों, कहावतों तथा सुक्तियों के प्रयोग से उपन्यास में पात्रों के जनजीवन की प्रवृत्तियों के दर्शन होते है तथा भाषा का सौंदर्य बढ़ाने में मदद प्राप्त होती है।

5.9 भाषा में प्रयुक्त पुराने संदर्भो में आधुनिक युगबोध का प्रयोग :-

उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में अनेक प्राचीन सन्दर्भों के माध्यम से आधुनिक युगबोध का अच्छी तरह से प्रस्तुतीकरण किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में विष्णू उपासना, गायत्री की उपासना, शिव की दीक्षा, वेंदों का महत्त्व, मोहम्मद गजनवी का आक्रमण, सोमनाथ मंदिर की कथा, गोस्वामी तुलसीदास का कथन आदि के माध्यम से भारतीय ऐतिहासिक परंपरा को लोगों के सामने व्यक्त करके प्राचीन इतिहास का महत्त्व स्पष्ट किया है। कल्कि भगवान के अवतार की कहानी, भरद्वाज ऋषी का आश्रम, प्रभु येशु का कार्य आदि के साथ आधुनिक धार्मिकता की तुलना करने का प्रयास किया है। यहाँ पुराने संदर्भों के माध्यम से आधुनिक युगबोध को साकार करने का लेखक ने प्रयास किया है।

निष्कर्षः-

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने पुराने या प्राचीन संदर्भों की सृष्टी करके आधुनिक युग बोध के दर्शन करा दिए है।

5.10 मिश्रित भाषा :-

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक पात्र ग्रामीण इलाके के है तथा शहर से संबंधीत भी है। कुछ पात्र शिक्षित है लेकिन ग्रामीण भूभाग के लोगों से संबंधित होने के कारण उन सबके संवादों में स्थानिक बुंदेलखंडी बोली, बोलचाल की हिंदी, अँग्रेजी भाषा तथा मुस्लिम पात्रों के संवादों में उर्दू - अरबी - फारसी शब्दों का प्रयोग आदि कारणों से उपन्यास की भाषा का रूप मिश्रित हुआ है। मिश्रित भाषा के प्रयोग से उपन्यास के संवाद स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल बन गये हैं। प्रस्तुत भाषा के मिश्रित भाषा के कुछ संवाद इस प्रकार हैं -

प्रस्तुत उपन्यास का एक पात्र लल्लू अँग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग करता है - जैसे - " डोंट वरी जीत हमारी ही होगी, मैंने पी. एम. पर यानी इंद्राजी पर मुकदमा कर दिया है। रायबरेली के इलेक्सन में गडबडी की थी उन्होंने। अभी केस हाई कोर्ट में है। राजनारायन हमारे गवाह है।" [21] तथा बलापुर गाँव का एक नागरिक गाँव में आऐ - साधु महात्मा के बारे में बताते हुए कहता है- " अउर सुनो, ई महात्माजी कउनो अइसे - वइसे महात्मा नहीं है। अँग्रेजी में एमे - वोमे हैं। पहले परोफेसर रहे इलाहाबाद में। फिर एक रोज का भवा कि रात में उनको सपना दिखाई पड़ा साच्छात संकर भगवान आए अउर बोले, तुम मेरी भक्ती करो। " [22] अली अहमद की मृत्यु पर सत्तार की अम्माँ शोक करते हुऐ कहती है - " अरे अब का बताईं, अबहीं गए अत्तवार के त मुलाकात हुई रही, अच्छे भले बोल - बतिया रहे थे। न कउनों तकलीफ न बिमारी। या परवरदिगार, कैसा गजब किया बेचारों पर। " [23] इन संवादों से उपन्यास में व्यक्त मिश्रित भाषा के दर्शन उजागर होते हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि उपन्यास की भाषा में अनेक भाषा के शब्दों के मिश्रण से उपन्यास की भाषा विविधरूपी एवं विविधांगी प्रतित होती हैं। अनेक भाषा के प्रयोंगों से लेखक ने उपन्यास की भाषा में एकात्मता स्थापित की है।

शैली

भाव चाहे कितने ही सुन्दर हों यदि उसकी अभिव्यक्ति ठीक ढंग से नहीं हो पाती, अर्थात उन्हीं के अनुरूप शैली तत्त्व का प्रस्तुतीकरण नहीं हो, तो शैली का महत्त्व कौडी के समान रह जाता है। इसलिए साहित्य में शैली का अनन्य महत्त्व है। प्रस्तुत उपन्यास में अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने शैली का बहुमुखी प्रयोग किया है, उसका विवेचन इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

5.2.1 संवादशैली :-

उपन्यासकार नाटक जैसा प्रभाव उपन्यास में निर्माण करने के लिए तथा परिवेशजन्य स्थिति एवं प्रसंग को स्वाभाविक बनाने के लिए संवाद शैली का प्रयोग करता है, 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में लेखक ने संवादशैली का अच्छा प्रयोग किया है।

जैसे - अली अहमद इलाहाबाद पहूँचने पर एक पनवाडी से दरख्वास्त करता है, इसी बीच दोनों के बीच स्थापित संवाद देखिए -

पनवाडी - कहाँ घर पडेगा ? ''

अली - ' करछना तहसील। '

पनवाडी - ' कौन गाँव ? '

अली - ' करमा बाजार। '

पनवाडी - ' खास करमा बाजार ? '

अली - ' करमा के पास ही एक गाँव है छीतूपुर, वहाँ अँग्रेजी स्कूल भी है। '

पनवाडी - तो छीतूपुर गाँव है। '

अली - ' नहीं, छीतूपुर के पास ही एक गाँव है बलापुर। '' [24]

यहाँ छोटे - छोटे संवाद, संवाद शैली का ऊँचा नमूना लगते हैं। इस संवाद में अली अपने गाँव के बारे में जानकारी प्रस्तुत करता है। दूसरा एक संवाद उपन्यास की संवादशैली का परिचय करा देते है। जैसे -

अली - ' काम बना ? '

रनिया - ' हाँ पचास खपडे की बात भई है। '

अली - ' मोलवी साहब कैसे है ? '

रनिया - ' बस आजै - कल के मेहमान हैं। बोली - वोली बंद है। '

अली - ' अरे! '

रनिया - ' हाँ ! '

अली - ' सहर नहीं ले गए ? '

रनिया - ' ऊ जाई नहीं रहे हैं। कह रहे हैं, मरना हई है, अपनी देहरी पर मरेंगे।

अली - ' सुन । '

रनिया - ' का । '' [25]

इस संवाद में रनिया जब्बार मौलबी साहब की स्थिति प्रकट करती है।

5.2.2 स्वगत शैली :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने उपन्यास के पात्रोंद्वारा स्वगतशैली का ऊँचा नमूना पेश किया है।

सत्तार एक दिन अखबार में गांधीजी और इस्लाम के नाम से छपा एक लेख पढ़ता है, और खुद ही स्वगतशैली में संवाद स्थापित करते हुए कहता है - " नाटक करता था और कुछ नहीं। रघुपति राघव राजा राम ..... बगल में गीता लेकर चलता था और मुसलमानों को फेवर में करने के लिए 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम' का नारा दिया करता था फ्राड कहीं का ...। " [26]

दूसरे एक प्रसंग में सृष्टिनारायण पाण्डे आज के युवकों की बदली जीवनशैली पर निराशा प्रकट करते हुए कहता हैं, " फिल्मी गाने सुने जा रहे हैं, स्टोरियाँ सुनी जा रही हैं। वास्तविक ज्ञान की वार्ता में किसी को रूचि ही नहीं है। राम ! राम ! अब कितना नैतिक पतन होगा हमारे हिंदू समाज का ? " [27]

उपन्यास में अनेक जगह पर स्वगतशैली के संवाद उभर उठे हैं, अधिकांश पात्रों के संवादों में लेखक ने स्वगतशैली का उचित प्रयोग किया है। उससे स्वगत कथन करनेवाले पात्र की मानसिकता भी स्पष्ट होती है।

5.2.3 पूर्वदीप्तिशैली :-

पूर्वदीप्तिशैली में घटनाओं को तत्काल न दिखाकर किसी पात्र की स्मृति में लौटा कर दिखाया जाता है। तात्कालिकता का भावबोध इससें कराया जाता है। पात्रों को अपना अतीत याद आते ही पूर्वदीप्तिशैली उभरती है। अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के कई पात्र अपने अतीत की यादों में खोये हुए दिखाई देते हैं, वहाँ पर पूर्वदीप्तिशैली उभरती है।

प्रस्तुत उपन्यास में जबलपुर में हुए हिंदू - मुस्लिम दंगे की खबर सुनकर अली अहमद को पाकिस्तान विभाजन के दिनों की याद आती है और वह सोचता है - " पाकिस्तान बनने के वक्त भयंकर मार - काट हुई थी। वे खबरें इलाहाबाद होती हुई अली अहमद के गाँव बलापुर में भी पहुँची थी। उसे तब जाकर मालूम हुआ था कि हिंदुओं और मुसलमानों में कुछ वैर - भाव भी है। " [28] इस घटना के याद से पूर्वदीप्तिशैली के दर्शन होते हैं।

दुसरे एक प्रसंग में बुद्धू भूरी को लेकर भाग जाता है, जिस कारण गाँववाले अली अहमद की बूरी तरह पीटाई करते हैं। उस रात अली को मुडकी के खलील की याद आती है जो राबिया को लेकर भाग गया था। अली अहमद सोचता है " सारे जवान लडके एक ही जैसे होते हैं। मगर ये भागकर कहाँ गए होंगे ? किस हाल में होंगे .....। " [29] इस प्रसंग में भी पूर्वदिप्तिशैली दृष्टिगोचर होती है।

रनिया पतेवरा से लौटते समय अपने बिते दिनों को याद करती हुई सोचती है - " भारतगंज का वह तालाब, पहाड़ी पर का मजार, मांडा के राजासाहब का महल ..... सेहरा - मकना से ढंका, छत्तुर के नीचे घोड़े पर बैठा अली ..... करछना से धूल - भरे चौडे रस्ते पर दौडता हुआ एक्का ..... भउजी से खटपट ..... पतरस भाई का दुल्लोपुर ..... नुरू की बीवी ..... किस्मत ने कहाँ - कहाँ

भटकाया ? फिर ..... फिर अपना बलापुर ..... अपना गाँव ..... अपना देस .....। '' [30] इस अतित की घटना के याद से उपन्यास में पूर्वदीप्तिशैली का सुंदर प्रयोग उजागर हुआ है।

5.2.4 स्वप्न शैली :-

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने स्वप्नशैली का यथार्थ प्रयोग किया है। उपन्यास के अंत में एक प्रसंग में अजय प्रकृति में हो रहे अजीब बदलाव को सपने में देखता है। जैसे - वह देखता है ऊँचा पर्वत, गहरी नदी, घना जंगल, पर्वत का गायब होना, उसका भागना, जख्मी होना, हवेली, तलवार धारी लोग, सुंदरियों की खामोशी, तोपे दागने की आवाज अजय का घबराकर चीखना, इस प्रसंग में स्वप्न शैली के दर्शन होते हैं।

5.2.5 काव्यात्मक शैली :-

काव्यात्मक शैली उपन्यास में भावगत प्रवाहपूर्णता की सृष्टी करती है। इसमें वर्ण्य विषय में एक प्रकार की भावनात्मकता आती है।

प्रस्तुत उपन्यास का एक पात्र लल्लू अँग्रेजी मिश्रित हिन्दी गीत गाता है जो एक काव्यात्मक शैली का नया नमूना लगता है। जैसे -

'' रिवर स्ट्रीम न जाओ डियर
फुटवा पड़ूँ
रिवर स्ट्रीम गए तो गयबे करे
उसके ओभर न जाओ डियर। '' [31]

गाँव की रामलीला में ननकू अत्यंत दर्दभरी आवाज में गाता है -

दो बैलों की जोडी
बिछुड़ गई रे
गजब भयो रामा, जुलम भयो रे
दो बैलों की जोडी .....। '' [32]

इससे उपन्यास में काव्यात्मक शैली के दर्शन होते है। साथ ही लोकगीतों के प्रयोग से भी काव्यात्मक शैली के दर्शन हमे होते है।

5.2.6 कथात्मक शैली :-

इसमें कथा के माध्यम से अपने मंतव्य को प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दूल्लोपुर गाँव का कथात्मक शैली में वर्णन किया है। - '' दुल्लोपुर गाँव दो खंडो में बँटा हुआ था। कुछ घर पहाड के उस पार थे और कुछ उस पार। पहाड पर ईसाइयों ने गिरजाघर, अस्पताल और स्कूल आदि बनवा रक्खे थे। पहाड के उस पारवाले घरों में वहाँ की स्थानीय जातियाँ - गोंड, कोल, बैगा आदि रहती थे। इसमें एक पहाड़ी गाँव की कथा गाँव जीवन को जिन्दा बनाती है। '' [33] उपन्यास में लालबहादुर शास्त्रीजी का परिचय भी लेखक ने कथात्मक ढंग से

व्यक्त किया है। - " शास्त्रीजी एक गरीब परिवार से आए हैं। मिर्जापुर के लाल डिग्गी नामक मुहल्ले में उनकी ननिहाल है। रामनगर में घर। बचपन में संस्कृत पढने रामनगर से बनारस नाव से जाया करते थे। एक रोज पैसा न होने के कारण तैरकर जा रहे थे कि गंगा में डूबने लगे ..... मल्लाहों ने उन्हें बचाया। " इस तरह कई घटना, प्रसंगों को लेखक ने कथात्मक ढंग से उजागर किया है।

5.2.7 आत्मकथात्मक शैली :-

आत्मकथात्मक शैली में पात्र अपने बारे में स्वयं कुछ - न - कुछ कहता है। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का एक पात्र नुरू आत्मकथात्मक शैली में अपना परिचय देते हुए कहता है। " मैं दो बरस पहले शहपुरा आया। इससे पहले अपने गाँव मुडकी में बनी मजूरी किया करता था। गाँव में गुजारा नहीं होता था। फसल के वक्त निराई - कटाई का काम मिलता था, वो भी दाने पर। ..... घर में बीवी और एक लडकी है। " [34] इसके अलावा सत्तार की अम्माँ आत्मकथात्मक शैली में अपने बारे में कहती है - " हमारा पूरा खानदान चला गया पाकिस्तान, मुलाँ हम नहीं गए ..... बारा बरस की उमर में हन हियाँ बहू बनकी आए रहीं, तब से ई बलापुर में हमें अपनी बिटिया की तरह माना। ..... का कमी हैं हम्में इहाँ। ..... अब जिंदगी ही कितनी है, आँखे फूट गई, कान बेकाम हो गए, कबूर में पाँव लटका है। ई चौथेपन में हम आपन गाँव काहे छोडैं ..... ? " [35] इस प्रकार इस उपन्यास में अनेक जगहों पर आत्मकथात्मक शैली के दर्शन होते है।

5.2.8 व्यंग्यात्मक शैली :-

आधुनिक युग में व्यंग्यात्मक शैली की लोकप्रियता के कारण उपन्यासों की व्यंग्यात्मकता में बढोत्री हो रही है, अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में इस शैली का प्रयोग कैसे किया है, इसे देखेंगे -

प्रस्तुत उपन्यास के एक प्रसंग में अकाल से पीड़ित लोगों को बाँटी जानेवाली राहतसामग्री में घास का घी जैसा एक पदार्थ है, जो विलायत के जंगल के पत्तियों से निकालकर लाया है। इस पर टिकाटिप्पणी करते हुए एक व्यक्ति कहता है- " उस घास को खाकर ढोर बीमार पडते हैं, तो यह लोगों को क्या फायदा करेगा ? तो दूसरा आदमी जवाब देता है कि ' ये बात तुम्हें रात को मालूम होगी । " [36] व्यंग्यशैली का लेखक ने यहाँ प्रयोग करके राहतसामग्री में दी जानेवाली घी की खिल्ली उडाई हैं।

दुसरे एक प्रसंग में एक स्त्री लल्लू की स्थिति देखकर कहती है " च्चः च्चः बिचारा ललूआ ..... 'कजनी ऊ जनम में बिचारा कउन पाप किहे रहा कि मरद से यकदम्मै नामरद हुई गवा।' तो दूसरी स्त्री इस पर कहती है कि 'ऊ मरद रहा का रे, तोका कइसे मालुम ? " [37] इस प्रसंग से उपन्यास में वर्णित व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि विवेच्य उपन्यास में विविध शैलियों के प्रयोग से लेखक ने भाषा की गहीमा को बढ़ा दिया हैं।

उद्‌देश्य

प्रत्येक रचना के पीछे उपन्यासकार का कोई - न - कोई उद्‌देश्य रहता है। और इसी उद्‌देश्य के उद्‌घाटन के लिए वह अपनी रचना को यथार्थता तथा स्वाभाविकता प्रदान करता है। वास्तव में उपन्यास का उद्‌देश्य ही जीवन की व्याख्या है। इस जीवन की व्याख्या के प्रस्तुतीकरण के लिए उपन्यासकार रचना का निर्माण करता है। इस संबंध में विनोदशंकर व्यास जी का कथन है- '' प्रत्येक उपन्यास लेखक किसी विशेष उद्‌देश्य से ही उपन्यास की रचना करता है। साहित्य के अन्य अंगों की भाँति उपन्यासों में भी उद्‌देश्य की अभिव्यक्ति के लिए लेखक को अनेक बातों का ध्यान रखना पडता है। किसी भी उद्‌देश्य की अभिव्यक्ति के लिए कई आधारों की आवश्यकता पडती है तथा उसकी अभिव्यक्ती कई प्रकार से की जा सकती है। '' [38] उपन्यासकार उपन्यास में मानव के जीवनदर्शन को व्यक्त करता है, और जीवन की विशिष्ठ रूप में आलोचना भी करता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी का 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की रचना के पीछे लेखक का विशिष्ट उद्‌देश्य है। हिंदुस्तान के ग्रामांचलों में रहनेवाले लोगों की कथा, व्यथा को वाणी देने के उद्‌देश्य से इस उपन्यास की रचना की गयी हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के उद्‌देश्य का विवेचन यहाँ इस प्रकार है -

5.3.1 ग्रामीण जनजीवन की स्थिति एवं गति का चित्रण करना :-

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में लेखक ने हिंदूस्तान के तमाम ग्रामीण लोगों के जनजीवन में उभरे प्रसंग, घटना, समस्याओं का प्रतिनिधित्व किया है। प्रस्तुत उपन्यास का एक उद्‌देश्य ग्रामीण जनजीवन की स्थिति एवं गति का चित्रण करना है। लेखक ने उपन्यास में स्वातंत्र्यपूर्व काल्खंड के ग्रामों का वर्णन करके स्वाधीनता के बाद ग्रामों की स्थिति में भी कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है, वहाँ के लोगों का जनजीवन पहले जैसे ही अभावग्रस्त और अत्याचारग्रस्त रहा है, यह दिखाने की कोशिश की है।

आज ग्रामीण भागों में विकास के नाम पर उत्पन्न विकृतियाँ, चुनावी राजनीति से ग्रामों के सामुहिक जीवन में उत्पन्न बिगड़ाव, राजनीतिक दलबंदी, दो पीढ़ियों के बीच का संघर्ष परंपरा के खिलाफ शिक्षित ग्रामीणों की मानसिकता, ग्रामीण जीवन की हड़पनीति, किसानों का शोषण, विकास के नाम पर विस्थापन, जातीय एवं धार्मिक भेदभाव, जमींदारी टूटन से पीड़ित जमींदारों का जीवन, जमींदारों की अमानवीयता, विवाहपूर्व एवं विवाह बाह्य अवैध यौन - संबंध, परंपरागत ग्रामीण परिवेश के अंधविश्वास, टूटते हुए ग्रामीण परिवार, नारी - शोषण झूठे मुकदमें दायर करने की नीति, किसान आन्दोलन की उद्‌भावना, पुरानी परंपरा के प्रति अगाध विश्वास, सबलोंद्‌वारा एवं सवर्णोंद्‌वार दलित - पीड़ितों का शोषण, परिवर्तन की हवा से मूल्य - विश्वास एवं परंपरा के टूटने का डर, आपसी ईर्ष्या आदि ग्राम - जीवन के स्थिति के पहलुओं को चित्रित करना विवेच्य उपन्यास का मूल उद्‌देश्य लगता है।

'' गाँव में बिजली आयी, चकबंदी आयी, ग्रामपंचायत आयी, यातायात के साधनों से ग्राम शहरों से जोडे गये, ग्रामों का शहरीकरण होता गया, ग्रामों में परिवर्तन होने लगा है। '' [39] इन परिवर्तनों के बावजूद भी गाँवो के लोगों की मानसिकता में कोई खास बदलाव नहीं हुआ, आज भी ग्रामीण जनजीवन में अंधविश्वासों और परंपराओं का बोलबाला है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण आँचल, पहाड़ी आँचल, में मानव और प्रकृति का गहरा संबंध प्रस्तुत किया है। उपन्यास में लेखक का उद्देश्य गाँव - जीवन के पर्वों - उत्सवों व्यथा के अवसरों, गीतों, पुराने एवं नये मूल्यों से ओतप्रोत जीवन को प्रस्तुत करना है। दुनिया की आपाधापी में इन दूर - दराज के अँचलों का वहाँ के समूह जीवन का सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया है, वहाँ की जनमानस की आकांक्षाओं, दारिद्रय और अशिक्षा के कारण निर्मित विषमताओं के साथ मानवीय संवेदनाओं का लेखा - जोखा पेश करना विवेच्य उपन्यास के लेखक का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

5.3.2 पहाड़ी जनजीवन की स्थिति का चित्रण करना :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने अपने उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में पहाड़ी जनजीवन की स्थिति का सजीव वर्णन किया है। उपन्यास में पहाड़ी इलाके में रहनेवाले लोगों के जनजीवन को उभारा है। वहाँ की भूमी, खेत - खलियान, पहाड, जंगल, पेड, पानी के विभिन्न स्त्रोत और इससे संबंधित वहाँ के लोगों का कारोबार, रहन - सहन परंपरा, उत्सव, पर्व, मेले, विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक रश्म - रिवाज आदि का लेखक ने सुक्ष्मता के साथ वर्णन करके यह दिखाया है कि विकास गति से दूर - दराज में बसे पहाड़ी जनजीवन की स्थिति किस प्रकार दयनीय है।

प्रकृति के होनेवाले बदलाओं के कारण वहाँ का जनजीवन कैसे प्रभावित होता है, इसका वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है - '' बरसात के दिनों में इतना पानी बरसा की चारों तरफ जलाहल हो गया। न खेत दिखाई पडे, न पेड, तालाब उफन पडा। गडहियाँ उमड आयीं। गाँव की गलियाँ नदियाँ बन गई। कमजोर मकान बह गए। जिनके खपडे नहिं छाए गए थे, उनके घरों में सूखी जमिन का बीता - भर टुकडा भी नहीं बचा। लोग कम्मर कम्मर तक पानी में चलकर दिसा - फरागत के वास्ते किसी तरह बगिया तक पहूँचते और निश्चिंत होकर निपटने के लिए जगह खोजते-खोजते हार मानकर पानी में ही बैठ जाते। '' [40] नैनी - बलापुर की सडके, गन्ने के हरे - भरे खेत, मंदिरों, गडहियों - तालाबों और आसपास के जुते - अनजुते खेत, दूर - दूर तक टिकोरों से लदी हुई अमराइयाँ, दूर - दूर दिखाई देनेवाले नीले - नीले पहाड और उस पहाड पर बकरियाँ, ढोर - डाँगर चर रहे हैं, आदि के रूप में लेखक ने कुदरत की दुनिया को दिखाकर पहाड़ी जनजीवन की अनेकसी कठिनाइयों को शब्दबध्द किया है।

चमार, पासी, कुम्हार, लुहार, हलवाई, बनिया आदि जातीयों का अपना - अपना कारोबार यहाँ स्पष्ट रूप में चित्रित किया हैं। दुर - पहाड़ों के बीच नदी - तालाब के किनारे छोटे - छोटे पहाड़ी देहातों में रहनेवाले लोग सुखः दुःख बाँटते हुए, संघर्ष करते हुए जीवन जी रहे हैं, इसका यथार्थ वर्णन लेखक ने किया है।

5.3.3 ग्रामीण जीवन में सांप्रदायिकता का चित्रण :-

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने गाँव - जीवन की सांप्रदायिकता को उजागर करने का प्रयत्न किया है। उपन्यास में लेखक ने हिंदू - मुसलमान जातियों के बीच की कटूता विभिन्न घटनाओं के माध्यम से व्यक्त की है, जिससे उपन्यास की कथावस्तु में फैली सांप्रदायिकता के दर्शन होते हैं। गाँव - जीवन के मुसलमानों की तरफ देखने की हिन्दुओं की दृष्टि पर भी प्रकाश डाला है। गाँव के एक जमींदार रामवृक्ष पाण्डेजी अपनी लडकी के विवाह में अली चुड़िहार की अनुपस्थिति के कारण परेशान होते है। और अली को मारते - पीटते है। उनका कहना है कि पाकिस्तान बनने के कारण हिंदुस्तान के मुसलमानों की मानसिकता में फर्क हो गया है। इस प्रसंग से ग्राम - जीवन में उभरी सांप्रदायिकता के दर्शन होते हैं।

जबलपुर में हुए दंगे की खबर दुल्लोपुर तक आ पहुँचती है, जबलपुर में हिन्दु - मुस्लिम जातियों में खुन - खराबा होता है, जिससे बेगुनाहों का खून बहता है। अली अहमद को इस दंगे से देश की विभाजन की चिंता सताती है और वह निराश होकर कहता है - " आख़िर कितने टुकडों में बँटेगा यह मुल्क ? " [41] दूसरे एक प्रसंग में गाँव - जीवन के स्कूली बच्चों में भी सांप्रदायिकता की विदग्धता अली चुड़िहार के बेटे बुध्दू को स्कूल के बच्चोंद्वारा कटुआ, मुसल्ला कहकर चिढ़ाने के प्रसंग में प्रस्तुत होती है। शहरों की विदग्धकारी सांप्रदायिकता अब गाँवों तक कैसे पहुँच चुकी है, यह स्पष्ट होता है।

बुध्दू - भूरी का प्रेम, रामदेउवा चमार का मुसलमान होना आदि घटनाओं को भी सांप्रदायिकता का रंग दिया है, सांप्रदायिकता के कारण मानवी मूल्यों में टूटनशीलता का आना, मानव का अमानवीय रूप धारण करना, जाति - जातियों में विवाद निर्माण होना, अबोध और निरीहों को अपनी जान गँवानी पडना, धार्मिक विसंवाद और उग्रता का निर्माण होना, सांप्रदायिक चेतना के परिणाम स्वरूप लोगों का विवेकहीन बनना आदि बदलाव जन्य स्थितियाँ सांप्रदायिकता के जहरीले मुखड़े को स्पष्ट करती हुई दिखाकर लेखक का इन नकली मुखडों का पर्दाफाश करना महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

5.3.4 नारी शोषण के विभिन्न आयामों को वाणी देना :-

लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में समाज की ऊँच - नीच जातियों के बीच में निर्माण हुऐ संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। इस संघर्ष में उपन्यास के कई स्त्री पात्रों को शोषण का शिकार होना पडा है।

प्रस्तुत उपन्यास की फुल्ली दाई दलित परिवार में उत्पन्न होने के कारण, गाँव के जमीनदारों से होनेवाली बेइज्जती को चुपचाप सहती है। फुल्ली दाई अपनी नातिन रामकली के साथ बगिया में आम बीनते समय गाँव के जमींदार रामवृक्ष पाण्डे उसकी बेइज्जती करते है और उसे धमकाते है। इन प्रसंगों से जातीयता के नाम पर होनेवाले स्त्री शोषण का चित्र स्पष्ट हुआ है।

उपन्यास के एक प्रसंग में सृष्टिनारायण पाण्डे फुल्ली दाई की नातिन रामकली की इज्जत लुटते हैं, फिर भी फुल्ली दाई अपनी नातिन को कहती है - " चुप - चुप ..... सो जा। " [42] क्योंकि फुल्ली दाई दलित परिवार की है, और

सृष्टिनारायण पाण्डे जमींदार होने के कारण उनके खिलाफ वह आवाज नहीं उठा सकती। यहाँ लेखक ने निम्न जाति में पैदा होने के कारण दलित नारियाँ सबलों के अन्याय अत्याचार को चुपचाप सहती हैं। यह दिखाना भी लेखक का उद्देश्य रहा है।

बुध्दू - भूरी के प्रेम में जातीयता के कारण सृष्टिनारायण पाण्डे भूरी की गाँव में बदनामी करते हैं। रामवृक्ष पाण्डेजी की कन्या लता को गाँववाले तथा उसके परिवारवाले पाण्डेजी की मृत्यु का कारण मानकर उसका मानसिक शोषण करते हैं तथा उसका गाँव से ट्रांसफर करते है। इस तरह उपन्यास में उभरे विभिन्न नारी पात्र शोषण के शिकार बने हुए दिखाई देते है। लेखक ने यहाँ नारी की स्थिति आज भी कितनी भयावह हैं इसे स्पष्ट कर दिया हैं। नारी भले दलित हो, भले सवर्ण पुरुष प्रधान संस्कृति में उसका कैसे शोषण होता हैं, इसे दिखाना लेखक को उद्देश्य है।

5.3.5 दलित - सवर्ण संघर्ष को दिखाना :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में दलित - सवर्ण संघर्ष को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

बलापुर के जमींदार रामवृक्ष पाण्डे और अली चुडिहार के बीच संघर्ष दिखाया है, तथा जब्बार मौलवी और अली चुडिहार के बीच का संघर्ष भी व्यक्त हुआ है। पं. रामवृक्ष और अली के बीच का संघर्ष उच्च स्तर के और निम्न स्तर के मुसलमानों के बीच का है। बलापुर गाँव में दलित - सवर्ण के बीच का संघर्ष गाली - गलौज के माध्यम से दिखाया हैं।

हिंदु लडकी और मुसलमान लडका एक - दुसरे को चाहने पर तथा उनका विवाह हो जाने से सांप्रदायिक मामला खडा होता है। रामदेउवा चमार के मुसलमान होने से सृष्टिनारायण पाण्डे बुध्दू को धमकाते है।

तोते पासीद्वारा मुन्ना नचनिया को गाँव की रामलीला में नचवाने के लिए इन्कार करने पर सृष्टिनारायण पाण्डे तोते पासी का घर लूटते है।

'' सृष्टिनारायण पाण्डे मुन्ना नचनिया के साथ अप्राकृतिक संबंध रखते है, परन्तु मुन्ना के द्वारा कुछ उल्टा - सुल्टा बोलते ही वे मुन्ना की पिटाई करते हुए कहते है 'चमार की औलाद, जबान लडाता है। '' [43] और उसे धक्के मारकर निकाल देते है।

बुद्धू - भूरी के प्रेम के कारण क्रोधित होकर सृष्टिनारायण पाण्डे बुद्धू को गालियाँ देते हैं।

सृष्टिनारायण पाण्डेजी की हत्या के मामले में अशोककुमार पाण्डे के कहने से गाँव के तीन निरदोस व्यक्ती - बुद्धू, रामदेव चमार, तोते पासी निम्न जाति के होने के कारण उन्हें गिरफ्तार किया जाता है। आदि घटनाओं के चित्रण से लेखक ने उपन्यास में वर्णित दलित - सवर्ण संघर्ष को, मुसलमानों के बीच के वर्गीय ऊँच - नीच संघर्ष को दिखाकर तथा उपन्यास में वर्णित, दलित - सवर्णों की स्थिति लोगों के सामने लाने के उद्देश्य को स्पष्ट करना लेखक का उद्देश्य है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि विवेच्य उपन्यास में लेखक ने हिंदुस्तान के ग्रामांचलो में रहनेवाले लोगों के जनजीवन को पाठकों के सामने लाने का प्रयत्न किया है, जिसमें उन लोगों की स्थिति, व्यथा, त्रासदी, संघर्ष, शोषण के विभिन्न आयाम सांप्रदायिकता, पहाड़ी, भूभाग आदि घटकों के माध्यम से उपन्यास के उद्‌देश्य को स्पष्टोक्ती दी हैं।

समन्वित निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में हमने विवेच्य उपन्यास में हुए भाषागत प्रयोग, विभिन्न शैलियों के माध्यम से संबंधित परिवेश की स्थिति, विवेच्य उपन्यास में चित्रित ग्रामीण एवं पहाड़ी जन - जीवन की स्थिति, एवं गति, गाँव जीवन तक पहुँची हुई सांप्रदायिकता की हवा, नारी शोषण के विविध आयाम दलित - सवर्ण, ऊँच - नीच, हिंदू - मुसलमान के बीच के संघर्ष, आदि को दिखाकर यहाँ यह दिखाने का प्रयास किया है कि विवेच्य उपन्यास में भाषागत प्रयोग अत्यंत कुशलता के साथ लेखकने प्रस्तुत किये हैं। विविध शैलियों के प्रयोगों से उपन्यास के परिवेश की शोभा बढ़ाई है। भाषा का पात्रानुकूल, परिवेशानुकूल प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य के रूप में लेखकने ऊँची - सफलता पायी है। ग्रामीण तथा पहाड़ी जनजीवन के साथ खुद को संपृक्त करके लेखकने इन अँचलों में जो- जो कमियाँ पायी हैं, इन्हें उद्देश्य के रूप में साकार किया है। समाज प्रबोधन करने का अच्छा परिचय लेखकने दिया है। गाँवों में जमींदार वर्गद्वारा निम्न जातियों का शोषण कैसे किया जाता है, उनके स्त्रियों की अस्मत को कैसे लूटा जाता है, विभिन्न संप्रदायों में बँटे समाज को विभिन्न संप्रदायों के बीच के युवक - युवतियों के प्रेमसंबंध तथा उनके विवाह कैसे अमान्य होते हैं, पुरूषप्रधान संस्कृति में नारियों का शोषण कैसे किया जाता है, छोटे - छोटे कारणों से दलित - सवर्ण के बीच संघर्ष कैसे खडे होते हैं, अकाल से पीड़ित जनता रोजी - रोटी के लिए कैसे विस्थापित होती है, विस्थापन के बाद भी माटी से अटूट संबंध ये लोग कैसे रखते हैं, पहाड़ी जनजीवन विकासगति से कैसे अछूता रहता है, बँटवारे में कई मुसलमान देशप्रेम के कारण हिंदुस्थान में ही कैसे रहते है, उनके बीच देशप्रेम कितना ऊँचा होता है, सांप्रदायिक तथा जातीय भेदाभेद से निरापराधियों की दयनीयता कैसे होती है, गाँव - जीवन में हुए हत्याकांडों में निरीहों के नाम कैसे जोडे जाते हैं। इन सभी बातों को वाणी देने का उद्देश्य प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक ने किया है।

संक्षिप्त में भाषा शैली और उद्देश्य के रूप में लेखक ने इस उपन्यास में कमाल की सफलता पायी है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि –

1) 'मुखड़ा क्या देखे' अब्दुल बिस्मिल्लाहजी का विवरणात्मक शैली में लिखा गया यह एक सफल उपन्यास है।
2) उपन्यास की भाषा में बलापुर, दुल्लोपुर, शहपुरा, आदि गावों के परिवेश में बोली जानेवाली ग्रामीण बोलचाल की भाषा का चित्रण मिलता है।
3) लेखक ने भाषा में लोकगीत, मुहावरें, कहावतें, सुक्तियाँ तथा उर्दू - अरबी - फारसी - अँग्रेजी शब्दों का यथार्थ प्रयोग किया है।
4) उपन्यास में वर्णित पुराने संदर्भों के द्वारा लेखकने आधुनिक युगबोध को स्पष्ट किया है।
5) उपन्यास में लेखक ने अनेक शैलियों का परिवेशानुकूल प्रयोग किया है, जिससे उपन्यास की शैली में विविधता के दर्शन होते है।

6) उपन्यास का उद्‌देश्य ग्रामीण तथा पहाड़ी जनजीवन की स्थिति एवं गति का चित्रण करना रहा है, जिसमें बलापुर गाँव के चुड़िहार परिवार के संघर्ष की कथा को केंद्र में लिया है।

7) समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता, नारी - शोषण, दलित - सवर्ण संघर्ष को लोगों के सामने प्रयुक्त करना उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्य रहा है।

8) उपन्यास द्‌वारा मुस्लिम समाज के साथ - साथ हिंदू तथा ईसाई लोगों के बीच की सांप्रदायिकता को उजागर करने का भी प्रमुख उद्‌देश्य रहा है।

संदर्भ - ग्रंथ

1. 'हिंदी उपन्यास : सिध्दान्त और समीक्षा', डॉ. मक्खनलाल शर्मा पृष्ठ - 98
2. 'साहित्यलोचन', श्याम सुन्दर दास पृष्ठ - 303
3. 'साहित्य की विविध विधाएँ, डॉ. रामप्रकाश पृष्ठ - 73
4. 'मुखड़ा क्या देखे', अब्दुल बिस्मिल्लाह पृष्ठ - 23
5. वही, पृष्ठ - 116
6. वही, पृष्ठ - 173
7. वही, पृष्ठ - 177 - 178
8. वही, पृष्ठ - 189
9. वही, पृष्ठ - 207
10. वही, पृष्ठ - 219
11. वही, पृष्ठ - 129
12. वही, पृष्ठ - 10
13. वही, पृष्ठ - 09
14. वही, पृष्ठ - 12
15. वही, पृष्ठ - 12
16. वही, पृष्ठ - 80
17. वही, पृष्ठ - 129
18. वही, पृष्ठ - 205
19. वही, पृष्ठ - 29
20. वही, पृष्ठ - 185
21. वही, पृष्ठ - 187
22. वही, पृष्ठ - 180
23. वही, पृष्ठ - 222
24. वही, पृष्ठ - 38
25. वही, पृष्ठ - 164
26. वही, पृष्ठ - 188
27. वही, पृष्ठ - 207
28. वही, पृष्ठ - 86
29. वही, पृष्ठ - 158
30. वही, पृष्ठ - 233
31. वही, पृष्ठ - 21
32. वही, पृष्ठ - 150
33. वही, पृष्ठ - 54 - 55
34. वही, पृष्ठ - 51

35. 'मुखड़ा क्या देखे' अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृष्ठ - 200
36. वही, पृष्ठ - 76
37. वही, पृष्ठ - 231
38. 'उपन्यास कला' विनोदशंकर व्यास, पृष्ठ - 143
39. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन डॉ. क्षितिज धुमाळ पृष्ठ - 103
40. 'मुखड़ा क्या देखे' अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृष्ठ - 112
41. वही, पृष्ठ - 86
42. वही, पृष्ठ - 42
43. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन डॉ. क्षितिज धुमाळ पृष्ठ - 120

उपसंहार

उपसंहार

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में सामाजिक संपृक्ति के दर्शन अधिक होने के कारण इस कालखंड के उपन्यास सही मायने में समाज जीवन के दर्पण लगते हैं। इस दशक के उपन्यास जनतंत्रीय विधा के रूप में महत्त्वपूर्ण माने जाने लगे हैं। सामाजिक वातावरण और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन इस युग के उपन्यासों का प्रमुख विषय रहा है। इस युग के उपन्यासों में सामाजिक जीवन का यथार्थ एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण तरलता के साथ मिलता है। प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध के लिए चुना गया उपन्यास विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त मानव का और उसके सामाजिक जीवन का तरल यथार्थ प्रस्तुत करने में काफी सफलता प्राप्त कर चुका है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने ही गाँव में घटित होनेवाली छोटी - बडी घटनाओं के माध्यम से'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का ताना - बाना बुना है। लेखक ने ग्रामीण जीवन, ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण रीति - रिवाज, ग्रामीण उत्सव - पर्व - त्योहार आदि घटनाओं के बीच अपना जीवन व्यतीत किया है, जिस कारण उनकी रचनाओं में ग्रामों के चित्रण में यथार्थता के साथ - साथ सजीवता के दर्शन भी होते है।

उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास में एक मुस्लिम परिवार को केंद्र में रखते - हुए, पूरे ग्रामीण परिवेश को उस परिवार के साथ जोडते हुए विभिन्न पात्रों का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक संघर्ष उजागर किया है। उनका यह चित्रण इतना सजीव हुआ है कि यह उपन्यास वास्तविकता के करीब पहुँचकर पाठकों के हृदय को छू जाता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने इस उपन्यास के माध्यम से समाज के नकली चेहरे को सामने लाने का प्रशंसनीय प्रयास किया हैं, जो मुखड़ा ऊपर से अच्छा दिखाई देता है मगर अंदर से उतना ही खराब एवं विकृत है। लेखक ने तत्कालीन युग में होनेवाले परिवर्तनों का, वहाँ के जन - जीवन पर बदलावजन्य परिस्थितियों के होनेवाले प्रभावों का अपने गहन और व्यापक अनुभवों का यथार्थपरक प्रस्तुतीकरण करने का प्रयास किया है। साथ ही मानवी जन - जीवन की संवेदनाओं और मूल्यों को भी प्रतिष्ठित करने कि अच्छी कोशिश की है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की कथा किसी एक व्यक्ति, एक जाति या एक धर्म की नहीं है अपितु समाज के ऊँच – नीच, दलित - सवर्ण, अमीर - गरीब आदी सभी वर्गों के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। देश तथा दुनिया में घटनेवाली बडी - बडी घटनाओं को शहरों में रहनेवाले लोग और गाँव में रहनेवाले सामान्य लोग एकही नजरसे नहीं देखते, उसमें पर्याप्त अंतर है, और उसी अंतर को विभिन्न घटनाओं एवं प्रसंगों के माध्यम से उपन्यासकार ने उजागर करने का सराहनीय प्रयास किया है। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की कथा स्वाधीनता के कुछ ही समय बाद से लेकर देश में आपातकाल लागू होने तक के कालखंड को अभिव्यक्त करती हैं। इस पूरे दौर में घटित देश और देश के बाहर के कुछ प्रसंग एवं घटना भारतीय ग्रामीण जीवन को किस तरह प्रभावित करते हैं तथा गाँव के लोग उन घटनाओं से अपने अस्तित्व को लेकर किस तरह चिंतित होते हैं, इस पर ही लेखक ने उपन्यास की नींव डाली है।

प्रस्तुत उपन्यास की सर्वप्रमुख विशेषता भाषा की प्रांजलता, रोचकता, एवं अछूती कथा - भूमी है। उपन्यास की वर्णन शैली, भाषा की विविधता एवं कथा आदि का प्रयोग उपन्यासकार ने एक नवीन दृष्टिकोण से किया है, जिसके कारण यह उपन्यास, उपन्यास विधा में अपना अलग अस्तित्व निर्माण करने में सफल होता है।

प्रस्तुत उपन्यास को अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने तीन चरणों में विभक्त किया है। इन तीन चरणों के अंतर्गत भी छोटे - छोटे खण्ड किऐ हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा प्रयोगशीलता का एक ऊँचा नमूना है। उपन्यास के प्रथम चरण में लेखक ने पाठकों को बलापुर के जनजीवन से परिचित कराया है, जहाँ विभिन्न जाति - धर्म के लोग रहते है। उन लोगो में अली अहमद चूड़िहार एक मुसलमान है, जो समाज के निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और अपनी स्थिति से उबरने के लिए, अनेक अभावों, तनावों, अन्याय - अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए शहपुरा जाता है, वहाँ से दुल्लोपुर जाता है। दुल्लोपुर में कुछ दिन संघर्षमयी जीवन बीताकर इस खण्ड के अंत में पुनः वापस बलापुर पहुँचता है उसकी यह परिक्रमा लेखक के चिंतन को झकझोरती हैं । उपन्यास के द्वितीय चरण में देश में हुऐ अनेक बदलावों, चुनावों, देश की सांस्कृतिक परंपराओं तथा शोषण के नये - नये आयामों से लोगों की पस्त मानसिकताओं से अवगत करता है। इस चरण में भी अली अहमद के परिवार की शोषण की पंरपरा कायम रहती है।

उपन्यास के तृतीय चरण में बांगलादेश के विभाजन से लेकर देश में आपातकाल लागू होने तक के कालखंड में उभरे प्रसंगों का चित्रण है, जिसमें आधुनिकता के दर्शन होते ही हैं, और उसके साथ शोषण की परंपरा निभाने के लिए एवं अन्यायग्रस्त लोगों का नेतृत्व करने के लिए अली अहमद की जगह उसका बेटा बुध्दू आता है। इस चरण में युवा पीढ़ी के आगमन से परंपरागत शोषण के खिलाफ विद्रोह एवं आंदोलन की धार तेज हो जाती है।

उपन्यास की कथा समग्र भारतीय समाज की कथा है, जिसमें संपन्न वर्ग के हिन्दू, मुसलमान दोनों मिलकर समाज के गरीब हिन्दू और मुसलमानों का शोषण करते हैं। इस मुख्य कथा के साथ उपन्यासकार ने अनेक गौण कथाओं का समावेश उपन्यास में करके मुख्य कथा को गति देने का प्रयास किया है। उपन्यास का हर पात्र अपनी - अपनी कथा को लेकर स्वतंत्र रूप में उपन्यास में अवतारित होता है। उपन्यास के छोटे - बडे प्रसंग तथा घटनाओं के कारण कथागत बिखराव की झलक दृष्टिगोचर होती है। उपन्यासकार ने भ्रष्टाचार, हड़पनीति, अप्राकृतिक लैंगिक संबंध ग्रामजीवन के अभाव आदि अलग - अलग विषयों को तलाशनेवाली कथाओं का भी प्रयोग किया है, जिससे उपन्यास में कथागत प्रयोग दिखाई देता है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की कथा में युगबोध का सफल चित्रण, अंतर्द्वद्वों की योजना, प्रासंगिक कथाओं के साथ मुख्य कथा का सुंदर समन्वय , आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, शिल्प - शैली की श्रेष्ठता आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक है। लेकिन ये सभी अतिरिक्त न होकर स्वाभाविक लगते हैं। इन पात्रों में पाठक अपने जीवन का प्रतिबिंब देखते हैं। उपन्यास का मुख्य पात्र अली अहमद चुड़िहार निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, और रामवृक्ष पाण्डे जैसे संपन्न वर्ग के जमींदार, पूंजीपतियों के शोषण का विरोध करता है। नारी पात्रों में रनिया और सत्तार की अम्माँ स्त्री - जीवन के विभिन्न पहलूओं का दर्शन करती हैं। उपन्यास के गौण - पात्र कथा के विकास में पर्याप्त

सहयोग देते हैं। उपन्यास के युवा पात्रों के चरित्र में आधुनिकता और रूढी, अनिष्ठ प्रथा का विरोध करने की क्षमता का परिचय प्राप्त होता है। उपन्यासकार ने उपन्यास में परिवेशानुकूल पात्रों की संरचना की है, जिससे मुख्य पात्र और गौण पात्र हमारे आसपास के वातावरण के ही लगते हैं।

उपन्यासकार ने कथा में सभी पात्रों का स्वाभाविक विकास किया है। विवेच्य उपन्यास के सभी पात्र युगबोध के प्रवाह में बहकर बदलावजन्य परिवेश के प्रतिनिधि बनकर सामने आते हैं। ये पात्र युगानुकूल बदलते हैं। प्रेम के स्तर पर धार्मिकता एवं जातीयता के बंधनों को तोडना चाहते हैं। युवक पात्र परंपराओं के दास बनकर रहने की अपेक्षा परंपरागत शोषण के खिलाफ क्रांति करना चाहते हैं परंतु इनकी आवाज को दबानेवाली बाह्य शक्तियाँ भी यहाँ उभरकर आती हैं। नारी पात्र परंपरा का पालन करनेवाली हैं परंतु शिक्षित युवा - नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है। लेखक ने ये सारे पात्र एक सांचे में नहीं ढाले हैं, इन्हें परिस्थिति सापेक्ष बनाकर स्वयं निर्णय लेने के लिए बाध्य किया है। उपन्यास में पात्रों की बहुलता जरूर है फिर भी हर पात्र अपनी अलग - अलग प्रवृत्तियों के दर्शन करा देता है। पात्रों के माध्यम से लेखक ने अपनी विचारधारा का वहन किया है। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने गांधीवादी, मार्क्सवादी, साम्यवादी विचारधारा को प्रस्तुति दी हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने उपन्यास के संवादों को तर्क संगत ढंग से विषयानुकूल, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, कुशलतापूर्वक गठित किया है, जिससे संवाद रोचक एवं हृदयस्पर्शी बन गए हैं। संवादों में नई अवधारणाओं का प्रयोग करके उपन्यासकारने संवादों के स्वरूप में परिवर्तन दिखाया है, जिससे संवादों में प्रयोगशीलता दृष्टिगोचर होती है। अनेक भाषाओं के मिश्रण से संवादों में मिश्रित भाषा का ऊँचा नमुना पेश किया है। आत्मकथनात्मक और प्रबोधनात्मक संवादो के कारण पात्रों की आंतरिक मनोवृत्ति, इच्छा, आकांक्षा, आदि का यथार्थ दर्शन होता है।

विवेच्य उपन्यास के अनेक संवादों से कौतुहल एवं उत्सुकता निर्माण होती है, तथा कथावस्तु के विषय का संदर्भ तुरन्त उभरकर सामने आता है। उपन्यास के संवाद पात्रों का परिचय देने में सक्षम है, इन संवादों ने कथावस्तु के विकास में पात्रों के चरित्रांकन में एवं उद्देश्य की अभिव्यक्ति में पर्याप्त सहायता की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि संवाद निरूपण में अब्दूल बिस्मिल्लाहजी को अद्भुत सफलता मिली है। संवादों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, भौगोलिक, आर्थिक अनेकविध संदर्भ सामने आते हैं, जिससे तत्कालीन युगबोध पर प्रकाश पडता हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने उपन्यास में परिवेश के रूप में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के पहाडी इलाके का सुंदर चित्रण खींचा है, वहाँ के प्रकृती चित्रण ने उपन्यास को एक नया आयाम प्रदान किया है। हरे - भरे जंगल, तालाब, बाग - बगिया, पंछी, वर्षा के दिनों में बढ़ता नदियों का पानी, गाँवो का चित्रण, मंदिर, चर्च, मस्जिद, अस्पताल, स्कूल, खपरेलों के घर आदि के वर्णन से उपन्यास की भूमि को सजीवता प्रदान की है। जमींदारों के घर - परिवेश, निम्न - वर्गीय लोगों के घर - परिवेश को भी लेखक ने वातावरण के रूप में उभारा है।

उपन्यास का कालखंड स्वाधीनता के कुछ बाद से लेकर देश में सन 1975 में आपातकाल लागू होने तक का विस्तृत विवरण देता है। इस कालखंड में स्वतंत्र

भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रवादी चेतना का उभार, धर्म - निरपेक्ष शक्तियों के बिखराव, पारंपारिक पेशों के टूटने - बिखरने, छोटी जातियों में सामाजिक न्याय और जनतांत्रिक चेतना के उभरने, गाँवों के शहरोन्मुख होते जाने, अकालग्रस्त स्थितियों की पीड़ा, धर्मांतर का बोलबाला, अशिक्षा के कारण जर्जर रूढ़ियों और अंधविश्वासों के बने रहने, ग्रामपंचायतों के चुनाव चक्र के चलते गाँवों में दलबन्दी के बढने, राजनीतिक पार्टियों द्वारा वैचारिक आधार को छोडकर सुविधा की राजनीति करने आदि का बडा ही विश्वसनीय एवं सटीक चित्रण वातावरण के रूप में उभरकर लेखक ने समकालीन परिवेश को खडा कर दिया है, जिससे स्वाधीन भारत का स्वाभाविक और यथार्थ दर्शन उपन्यास में अभिव्यक्त हुआ है।

'मुखड़ा क्या देखे' बीसवीं सदी के अंतिम दशक का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें लेखक ने ग्रामांचलों की ग्रामीण भाषा का और नगरों की खडीबोली भाषा का इस्तेमाल करते हुए पात्रानुकूल भाषा का अच्छा नमुना पेश किया है। प्रस्तुत उपन्यास की सर्वप्रमुख विशेषता भाषा की प्रांजलता, रोचकता एवं ग्रामीण शैली है, उपन्यासकार ने उपन्यास में भाषा तथा शैली में अदभुत विविधता दिखाई है। जिससे भाषा में सादगी, संजीदगी के साथ अपूर्व प्रवाहमयता पनपती हैं। उपन्यास में लेखक ने चित्रात्मक, लोकगीतात्मक भाषा का सुंदर प्रयोग किया हैं जिससे उपन्यास की भाषा में भावानुरूपता की विशेषता दिखाई देती है, अनेक जगह मुहावरें, कहावतें, सुक्तियों के कारण भाषा सशक्त बनी है। भाषा में प्रतिकात्मक प्रयोग जगह - जगह पर किये हैं। ग्राम्य भाषा और नगरीय भाषा में पर्याप्त अंतर दिखाया है। स्वाभाविक भावाभिव्यक्ति के लिए प्रचलित उर्दू - अरबी - फारसी, अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग मुक्त - भाव को आँचलिकता का चोला पहनाकर भाषा द्वारा संबंधित भूभाग की व्यथा का प्रकटीकरण किया है। प्रस्तुत उपन्यास की भाषा गढ़वाली हिंदी है।

भाषा की तरह प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न शैलियों का प्रयोग हुआ है। स्वगतशैली, पूर्णदीप्तिशैली, स्वप्नशैली, काव्यात्मक शैली, कथात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली इन सभी शैलियों का उपन्यास में कुशलता से निर्वाह हुआ है, जिसके कारण उपन्यास पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। आज के परिवर्तित समाज की जटिलता को आसानी से खोलकर रखना लेखक के लिए असंभव है परिणामस्वरूप विवेच्य उपन्यास के शिल्प में जटिलता के दर्शन होते हैं। कथागत बिखराव की प्रवृत्ति के कारण विवेच्य उपन्यास की शैली में भी बिखराव एवं जटिलता आयी हैं।

प्रस्तुत उपन्यास बहुउद्देशीय है। लेखक ग्रामीण जनजीवन की स्थिति से पाठकों को अवगत करना चाहता है, पहाडी जनजीवन के चित्रण से वहाँ के लोगों का रहन - सहन, देश - विदेश की हलचलों से प्रभावित लोग, सांप्रदायिकता की आग में जलनेवाले निम्नवर्गीय परिवार, स्वाधीन भारत में आज भी नारी की उपेक्षाग्रस्त स्थिति, आज भी दलित और सवर्ण संघर्ष की दयनीय स्थिति आदि घटनाओं के चित्रण से प्रबुध्द पाठकों को आकर्षित करना इस उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना जा सकता है, जो लेखक की मौलिक प्रतिभा का प्रमाण तो है ही, साथ ही सूक्ष्म पर्यवेक्षण - शक्ति और अदभुत लेखन - कुशलता का भी परिचायक है।

विवेच्य उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण जीवन के बदलावों को, वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों को ग्रामांचलों

की हड़पनीति को, आपसी ईर्ष्या- द्वेष को, वहाँ की रूढि - प्रथा - परंपरा को रेखांकित किया है। ग्रामांचलों के जातीय एवं धार्मिक भेदभाव को, जमींदारों की परंपरागत शोषण की ऐंठन को, जमींदारों के अमानवीय व्यवहारों को, नारी - शोषण की पीड़ा को, मूल्य - विघटन की स्थिति को लेखक ने परिवेश की उपज की यथास्थिति को प्रस्तुत करने का यथार्थ प्रयत्न किया है।

संक्षिप्त में इस उपन्यास में गाँव - जीवन के मुसलमानों की ओर देखने की हिंदुओं की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। ग्रामांचलों में भी सांप्रदायिकता की जडे कितनी गहराई तक पहुँच चुकी है, इसका चित्रण यहाँ हुआ है। सांप्रदायिकता की आग को बढानेवाले कारणों की चर्चा भी यहाँ की गयी है। ग्रामजीवन में विकास के नाम पर होनेवाले विस्थापन की पीड़ा को लेखक ने उभारा है। अकाल में राहत कार्य की सामग्री पहुँचानेवाले देशी प्रशासन पर व्यंग्य भी किया है। ग्रामीण जीवन के अप्राकृतिक एवं अवैध यौन - संबंधों पर भी लेखक ने चिंतन किया है। इसके साथ - साथ लेखक ने विवेच्य उपन्यास में स्थित ग्रामीण जीवन में स्थित जातीय एवं धार्मिक भेदाभेद को बलापुर माध्यम से स्पष्ट किया है। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन के अंधविश्वास, जमींदारी टूटन से पीड़ित बने जमींदारों का जीवन तथा उनकी अमानवीयता पर भी चिंतन मिलता है। चुनावी राजनीति से ग्रामीण जीवन में आये बिगडाओं, ग्रामीण जीवन में स्थित हड़पनीति, ग्रामीण जीवन की पीड़ाओं को बर्दाश्त न होने के कारण किया जानेवाला पलायन, ग्रामों में विकास के साथ उभरनेवाली विकृतियाँ, गाँव जीवन में शोषण के विविध आयाम आदि अनेक प्रकार के मुखड़ो का चित्रण लेखक ने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में किया है। उपन्यास की भाषा में गढवाली बोली का इस्तेमाल होने के कारण उपन्यास यथार्थ परिवेश को उभारने में सफल हुआ है।

निष्कर्षतः ग्रामीण सम्बन्धों की जटील, सघन और संस्कारपुष्ट संरचना का गहराई के साथ विश्लेषण करनेवाला यह उपन्यास, उपन्यास के क्षेत्र में सर्वथा नूतन मोड का सूचक रहेगा। साथ ही अपनी यथार्थता, सजीवता, स्वाभाविकता के कारण अंतिम दशक के उपन्यास के क्षेत्र में 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास 'मील का पत्थर' सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

संदर्भ ग्रंथ - सूची

आधार ग्रन्थ

मुखड़ा क्या देखे	अब्दुल बिस्मिल्लाह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. प्रथम संस्करण - 1996

सहायक ग्रन्थ सूची

क्र.	पुस्तक	लेखक / संपादक	प्रकाशक, वर्ष, संस्करण
1.	कुछ विचार	प्रेमचन्द	सरस्वती प्रेस बनारस, प्रथम संस्करण – 1939
2.	बाणभट्ट की आत्मकथा	हजारीप्रसाद व्दिवेदी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. प्रथम संस्करण – 1984
3.	बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन	डॉ. क्षितिज धुमाळ	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर. प्रथम संस्करण – 2006
4.	हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग	डॉ. त्रिभुवन सिंह	हिन्दी प्रचारक संस्थान, पिशाचमोचन, वाराणसी प्रथम संस्करण – 1973
5.	साहित्यालोचन	श्यामसुन्दर दास	इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, नवीं आवृत्ति - सम्वत् – 2006
6.	उपन्यास : स्थिति और गति	डॉ. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर	पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1977
7.	हिन्दी उपन्यास कला	डॉ. प्रतापनारायण टंडन	हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, प्रथम संस्करण – 1965
8.	हिन्दी उपन्यास	शिवनारायण श्रीवास्तव	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी संस्करण – 1966
9.	काव्य के रूप	गुलाबराव	आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली , संस्करण – 1992
10.	हिन्दी उपन्यास : सिध्दान्त और समीक्षा	डॉ. मक्खनलाल शर्मा	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद संस्करण – 1966
11.	साहित्य की विविध विधाए	डॉ. रामप्रकाश	सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहनगर दिल्ली. प्रथम संस्करण – 1986
12.	उपन्यास कला	विनोदशंकर व्यास	शिक्षासदन, काशी, प्रथम संस्करण – 1941

क्र.	पुस्तक	लेखक / संपादक	प्रकाशक, वर्ष, संस्करण
कोश :-			
13.	हिन्दी साहित्य कोश, भाग - 1	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी तृत संस्करण, वसंत पंचमी – 1985

891.433
JAD
T15485